thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 10 अंक : 47-48 रोहतक, 14 मई से 21 मई, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

भ्रष्टाचार मुक्त लोकपाल बिल

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

लोकपाल बिल के राज्यसभा और लोकसभा में पारित होने को ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है। वास्तव में यह ऐतिहासिक तो है, क्योंकि 45 वर्षों से लोकपाल, फुटबाल की भांति राजनेताओं के मैदान में ठोकरें खा रहा था। इसके लिए आदरणीय अन्ना हजारे जी दो वर्षों से आन्दोलन चला रहे थे और कई बार अनशन पर भी बैठे, परन्तु सरकार इस भ्रष्टाचार मुक्त बिल को अन्ना जी की मांग कहें या जनता की मांग के अनुसार पास करने को किसी भी कीमत पर तैयार न थी। इस संगठन से जुड़े लोगों के विरुद्ध सरकार ने तरह-तरह के हथकण्डे अपनाये कि जिससे ये लोग इस लोकपाल बिल के मुद्दे को भविष्य में न उठायें, परन्तु इसमें सरकार को पूर्ण सफलता न मिल सकी, आन्दोलन कर्त्ताओं को काफी परेशानियों का सामना भी करना पड़ा। यह तो स्वाभाविक ही है कि जो लोग भ्रष्टाचार में संलिप्त हों वो कभी नहीं चाहेंगे कि कोई ऐसा देश में कानून बने, जो उनके लिए बाधक सिद्ध हो। इस पर अलग-अलग राजनैतिक दलों के विचार थे, अन्दर से शायद यह कोई नहीं चाहता था कि लोकपाल बिल सिविल सोसायटी की मांग के अनुसार पास हो, लेकिन कुछ ऊपर-ऊपर से दिखावा अवश्य कर रहे थे कि हम चाहते हैं कि सख्त से सख्त कानून बने जो भ्रष्टाचार को कम करने में कारगर सिद्ध हो। इस प्रकार से लोकपाल बिल को सरकार लटकाने में सफल होती रही।

सिविल सोसायटी से जुड़े लोगों में से कुछ लोगों ने यह महसूस किया कि बिल तो सत्ता में बैठे लोगों द्वारा पास किया जाना है और सत्ता में बैठे लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो भ्रष्टाचार में संलिप्त हैं और बहुत से लोगों पर अभियोग भी चल रहे हैं, ये लोग उनके बचाव में यह कदम उठा रहे हैं, उन्होंने बड़े गहराई से बुद्धिमत्ता से यह विचार किया कि सत्ता पलट के वगैर लोकपाल बिल पास नहीं हो सकेगा। इसके लिये सत्ताधारी पार्टियों को सत्ता से हटाने के लिये इनका सामना करने के लिए एक राजनैतिक दल होना चाहिए जो जनता की मांगों को पूरा करने के लिए आगे आकर कार्य करें और उस दल में ऐसे लोगों को शामिल किया जाये कि जिनकी छवि साफ सुथरी हो, क्योंकि स्वच्छ छवि के लोगों का जनता पर प्रभाव पड़ता है, चाहे देश में कितना भी भ्रष्टाचार फैला हुआ है, परन्तु अब भी देश में ईमानदारों की कमी नहीं है। उनको संगठित करने की आवश्यकता है।

जब देश पराधीन था और देश में अंग्रेज शासन कर रहे थे, उस समय देश की आजादी के लिए देश के वीर जवानों ने क्रान्तिकारी आन्दोलन छेड़ा हुआ था। महात्मा गांधी जी का भी सत्याग्रह जारी था। उस समय दो दल थे एक गरम दल और एक नरम दल। गरम दल का संचालन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस कर रहे थे और नरम दल की बागडोर महात्मा गांधी जी ने संभाल रखी थी। वास्तव में देश को आजाद कराने का श्रेय तो क्रान्तिकारियों को जाना चाहिए था, परन्तु आजादी का श्रेय मिला महात्मा गांधी जी को। और इतिहास में लिखा गया कि महात्मा गांधी बिना खून की बूंद बहाये आजादी लाये। क्या जो शहीद हुए, जेलों में यातनाएं सहते-सहते दम तोड़ गये, फांसी के फन्दों को चूम गए, देश आजाद होने पर कत्लेआम हुए, उनके शरीर में खून नहीं पानी था। इस बात को सब जानते हैं कि कौन आजादी लाया और आजादी के लिए कितने देश के नौजवानों ने अपना बलिदान दिया। जो स्वतन्त्रता सेनानी अभी जीवित हैं, वह जानते हैं। अब मूल विषय की चर्चा करते हैं।

सिविल सोसायटी के जो लोग चाहते थे कि एक राजनैतिक मंच बनाया जाये और उसके माध्यम से इन राजनैतिक सत्ताधारी दलों का सामना किया जाये। श्री अन्ना हजारे जी इस बात से सहमत न थे क्योंकि वह गांधी जी की विचारधारा को ही जो आन्दोलन, सत्याग्रह वाली थी, उसी पर आरूढ़ होकर लोकपाल बिल को पारित कराने की बात पर अड़े हुए थे। जो अलग हो गये, उनके विरुद्ध तरह-तरह की बातें हुईं, उनके विरुद्ध प्रशासनिक कार्यवाही भी हुई अर्थात् जो हथकण्डे सरकार अक्सर अपनाती हैं वे सब अपनाये गये, परन्तु वे देश की आजादी से जुड़े क्रान्तिकारियोंकी भांति पीछे नहीं हटे और आम आदमी पार्टी का गठन किया और उसके लिये कमर कसकर पूरे तन, मन, धन से पूरी मेहनत लगन के साथ काम किया। उनकी मेहनत काम आयी और जो 30-40 वर्षों से राजनीति के बड़े-बड़े राजनेता हैं, उनको पराजय का सामना करना पड़ा, जनता ने उन पर विश्वास किया और प्रथम बार में 28 सीटों पर आम आदमी पार्टी की जीत हुई। सभी सत्ताधारी दलों के पैरों तले जमीन खिसक गई। मानो एक राजनीति में भूचाल-सा आ गया और इस भूचाल के झटके का करंट इतना लगा कि सत्ताधारी दलों की सोच बदल गई। जिस सोच को मोच आ गई थी वह आम आदमी पार्टी की जीत के झटके से एकदम ठीक हो गई और लोकपाल बिल को पास कराने की पुन: याद आ गई, जो 45 वर्षों से धूमिल पड़ी थी। उधर से अन्ना जी अन्दर से बड़े खुश हुए परन्तु बाहर से खुश नहीं थे। इसका फायदा सत्ताधारी दलों ने उठाया और श्री अन्ना हजारे जी को जिस लोकपाल बिल में खामियां ही खामियां नजर आती थी, वह एकदम से सारी ठीक नजर आने लगी। श्री अन्ना जी के चश्मे का शीशा ही बदल गया जिससे पढ़ने से सब कुछ ठीक ही ठीक लिखा दिखाई देने लगा और अन्ना जी ने इस पार्टी की जीत की आड़ में अपने आन्दोलन को कामयाब बनाने का मौका हाथ से न जाने दिया। देखा कि अब सत्ताधारी दल और विपक्ष दोनों आम आदमी पार्टी की जीत से हिले हुए हैं। इस अवसर को देख श्री अन्ना हजारे जी ने अपने अनशन की घोषणा कर दी। अन्ना जी को मनाने मुम्बई से गये राजनेताओं ने अनशन न करने का अनुरोध किया, उसके बाद कांग्रेस पार्टी ने लोकपाल बिल पास करने का बिगुल बजा दिया, बिगुल की आवाज जनता पार्टी के कानों में पड़ी, तुरन्त ही लोकपाल बिल को पास करवाने का आश्वासन सत्ता दल को दे दिया। यह दिल्ली में आम आदमी पार्टी को जनता के मिले समर्थन का असर हुआ और बिल को पास होते ही अन्ना जी को बिल के बधाई का पात्र बना दिया। अन्ना जी ने भी राजनेताओं का जमकर तहेदिल से धन्यवाद किया। जबकि इसका पूरा सिरे अन्ना जी को नहीं आम आदमी पार्टी के लोगों को भी जाता है, परन्तु अन्ना जी ने उल्टा ही आम आदमी पार्टी के विरुद्ध ही अपने को प्रस्तुत किया। लोकपाल बिल तो

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

महाघोटाला

❑ इन्द्रजित्देव, चूना भट्ठियां, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर मो० : 09466123677

गतांक से आगे....

इस प्रक्षेप पर मैसूर में एक ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें क्रान्तिकारी आर्य संन्यासी स्वामी काव्यानन्द जी ने इस मन्त्रांश को **'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** के शुद्ध रूप में ही रखा। उन्होंने पूर्वोक्त पाठों के द्वारा मन्त्र को प्रस्तुत करके यह सिद्ध किया कि **'न'** उदात्त है, **'तस्य'** स्वरित है तथा उदात्त व स्वरित की सन्धि नहीं होती। उदात्त व उदात्त की, अनुदात्त व अनुदात्त की एवं स्वरित व स्वरित की सन्धि हो सकती है। सवर्णी होने पर तो उदात्त व अनुदात्त की सन्धि हो सकती है। इसलिए यह पाठ **'नतस्य'** न होकर **'न तस्य'** ही है।

पूरे देश में सामान्यत: परन्तु बंगाल में विशेषत: सतीदाह प्रथा का ताण्डव भयंकर रूप में छाया हुआ था। इससे मातृशक्ति अपमानित ही नहीं, विनाश के कगार पर खड़ी थी। यह 19 शती की घटना है। राजा मनमोहनराय का हृदय चीत्कार कर उठा। उन्होंने तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलियम वैंटिक के समय में कोलकाता उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की। इसका पौराणिक पण्डितों ने तीव्र विरोध किया व सतीदाह प्रथा को वेदानुकूल घोषित करते हुए यह वेदमन्त्र प्रस्तुत किया—

इमा नारीरविधवः सुपत्नीरंजनेन सर्पिषासं विशं तु।
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आरोहन्तु जनयो यो निमग्रे॥ ऋ० 10.18.7

अर्थात् ये पति से युक्त स्त्रियाँ पतिव्रता बनकर घृतादि गन्धयुक्त पदार्थ से शोभित हो स्वगृह में प्रवेश करें। वे अश्रुरहित, रोगरहित, सुन्दररत्न एवं रम्य गुणों वाली सन्तानों को जन्म देने में समर्थ स्त्रियां आदर सहित पहले गृह में प्रवेश करें (घर में आयें)।

बंगाल के अज्ञानी व अन्ध-विश्वासी पण्डितों ने इस मंत्र को थोड़ा बदलकर न्यायालय में रखा। मन्त्र के **'नारीरविधवाः'** शब्द का पद बनता है—**'नारी अविधवाः'**। इसे बदलकर **'नारी विधवाः'** कर दिया। पदच्छेद के समय 'र' का 'अ' बना परन्तु उन्होंने 'र' को हटा ही दिया। आगे के अर्थ वही रखे—''पवित्रता, घृतादि सुगन्धित पदार्थ से शोभित व अश्रुरहित होकर''। मंत्र के अन्त में आए शब्द **'योनिमग्रे'** कर दियाजिसका अर्थ यह हो जाएगा—अग्नि में प्रवेश करे। राममोहनराय स्वयं तो वेदों के विद्वान् न थे। अत: उन्होंने इधर-उधर सम्पर्क किया तो पता चला कि दक्षिण भारत में कुछ पण्डित हैं जो जटा पाठविधि से बोलकर इस मंत्र का शुद्ध रूप प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्हें बुलाया गया व उन्होंने इस मंत्र को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा—'नारीरविधवाः' का पदच्छेद 'नारी-अविधवाः' ही बनेगा एवं 'योनिमग्रे' ही मंत्र में है, योनिमग्रे नहीं है। इस आधार पर याचिका स्वीकार की गई तथा सतीदाह कर्म पर प्रतिबन्ध लगाया गया। मिलावट पर विजय पाने की यह प्रेरक घटना है।

भवभूति नामक एक संस्कृति कवि हुए हैं। उन्होंने 'उत्तररामचरित' नामक एक फ़सादी ग्रन्थ लिखा व आज वाल्मीकि रामायण का भाग बनकर प्रचलित है। इसके अनुसार श्रीराम ने राज्याभिषेक के पश्चात् सीता भगवती का परित्याग किया व शम्बूक नामक एक शूद्र का वध किया। इसमें यह भी लिखा मिलता है कि तब ऋषियों के यहां मांसाहार का प्रयोग होता था। शम्बूक वध इसलिए किया क्योंकि कुछ ब्राह्मण राजाराम के पास जाकर बोले—''तुम्हारे राज्य में एक शूद्र तपस्या कर रहा है तथा उस तपस्या का दुष्परिणाम यह हो रहा है कि हमारे जीते हुए भी हमारे पुत्रों की मृत्यु हो रही है।'' यह शिकायत सुनते ही राम ने वन में जाकर शम्बूक का वध कर दिया। आज के दलित नेता राम का नाम लेकर आर्यों को कोसते हैं कि आर्यों ने हमारे पूर्वजों पर अत्याचार किए हैं। द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य का अंगूठा मांगने का प्रमाण भी वे देते हैं।

हमारा विनम्र निवेदन है कि पूर्वोक्त घटना का वर्णन वाल्मीकि ने किया, यह असत्य है, क्योंकि वाल्मीकि ने रामायण का लेखन राम के राज्याभिषेक तक ही किया। वहाँ तक 7 ही काण्ड हैं व 'उत्तररामचरित' शीर्षक का शाब्दिक अर्थ ही यह है कि यह सातवां काण्ड बाद में मिलाया गया है। प्रक्षेप न मानने वालों से हमारा अनुरोध है कि वे वाल्मीकि द्वारा रामराज्य का वर्णन करते हुए लिखे 6ठे काण्ड के ये शब्द पढ़ें—**'न च स्म वृद्धा बालानां प्रेतकार्याणि कुर्वते'** अर्थात् रामराज्य में किसी वृद्ध ने किसी बालक का दाहकर्म नहीं किया अर्थात् बालमृत्यु नहीं होती थी। इस स्पष्ट घोषणा के बाद यदि भवभूति ने यह लिख दिया कि ब्राह्मणों के पुत्र शम्बूक की तपस्या से मरने लगे थे, तो इस पर कौन सत्याग्रही विश्वास करेगा? आज के दलित नेताओं से हमारा निवदेन यहहै कि किसी की तपस्या से दूसरे व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी, यह पूर्णत: विज्ञान व सृष्टि-नियम के विपरीत है तथा अभी भी उन्हें विश्वास नहीं है तो वे आज स्वयं तपस्या करने हेतु बैठें तथा उनके विश्वसानुसार आज के ब्राह्मणों की अगली पीढ़ी स्वत: ही मर जायेगी तथा उनका आक्रोश भी समाप्त हो जाएगा।

रामराज्य में सीता-परित्याग व ऋषियों द्वारा मांसाहार के प्रयोग का आरोप भी मूलग्रन्थ रामायण के मूल स्वरूप के विपरीत है। भवभूति ने अपने परवर्ती ग्रन्थ द्वारा रामकथा में प्रक्षेप किया व श्रीराम को अपयश का भागीदार बनाने का कुप्रयास किया।

वर्तमान (वाल्मीकि) रामायण में लगभग 24,000 श्लोक उपलब्ध हैं, परन्तु सब-के-सब महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित नहीं माने जा सकते। वड़ोदरा विश्वविद्यालय के ओरियण्टल इन्स्टीच्यूट के शोधार्थियों के अनुसंधान का निष्कर्ष यह है कि केवल 18,719 श्लोक ऐसे हैं जिन की उपस्थिति लगभग वर्तमान में उपलब्ध सभी पाण्डुलिपियों में समान है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि रामायण में लगभग 33 प्रतिशत मिलावट है। महाभारत में प्रक्षेप रामायण की अपेक्षा कम नहीं है। 'सत्यार्थप्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास के अनुसार मूलग्रन्थ (=जय) चार सहस्र चार सौ श्लोकों में व्यास जी ने लिखा परन्तु 'भारत' नाम देकर वैशम्पायन आदि ने इसे दस सहस्र श्लोकों का बना दिया। 'महाभारत' नाम बाद में सौति ने रखा व कुछ और श्लोक जोड़े। महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराजा भोज के पिता के शासन काल में इसके श्लोकों की संख्या पच्चीस सहस्र व भोज की आधी उम्र में तीस सहस्र तक यह संख्या पहुँच गई थी जबकि आज के महाभारत का पौधा लगभग एक लाख श्लोक लिए हुए हैं। इस ग्रन्थ पर लगभग 60 वर्षों तक निरन्तर 50 अनुसंधानकर्त्ता प्रोफेसरों ने शोधकार्य भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पुणे के तत्त्वावधान में किया है। उन्होंने लगभग 1,000 पाण्डुलिपियां, देश-विदेश से एकत्रित कीं व यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि आरम्भ में 'जय' में 8,800 श्लोक थे, जबकि आज महाभारत में लगभग एक लाख श्लोक उपलब्ध हैं। यह प्रक्षेप विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न अवसरों पर किया गया। पूरे ग्रन्थ में यत्र-तत्र परस्पर विरोध तो है ही, सम्भव प्रमाण के विपरीत भी कई घटनाएँ व संवाद समाहित हैं। गीता को भले ही एक पृथक् ग्रन्थ बनाकर आज प्रकाशक बेच रहे हैं परन्तु वास्तव में यह महाभारत का ही भाग है। महाभारत में प्रक्षेप हुआ तो कैसे सम्भव है कि गीता में प्रक्षेप न हुआ हो। गीता (7/24) में कृष्ण जी स्वयं को निराकार घोषित करते हैं तो गीता (4/7) में ही स्वयं को साकार रूप में प्रकट (=अवतार) होने की घोषणा भी करते हैं। प्रक्षेप केवल ग्रन्थों में उपरोक्त रूप में तो हुआ ही है, वैदिक सिद्धान्तों, मान्यताओं व तथ्यों में मिलावट की अन्य विधियां भी हैं। मूलग्रन्थ के विपरीत अपना ग्रन्थ लिखना द्वितीय विधि है। उदाहरण स्वरूप 'रामचरित-मानस' को लिया जा सकता है। राम के समकालीन वाल्मीकि ने राम को एक महापुरुष के रूप में प्रस्तुत किया परन्तु तुलसीदास ने सम्वत् 1631 वि० में राम को महापुरुष नहीं रहने दिया अपितु ईश्वर बनाकर हम से परे कर दिया। हम जीव ईश्वर बन नहीं सकते, अत: तुलसीदास के ग्रन्थ में वर्णित राम के कार्य हम कर नहीं सकेंगे। दूसरा प्रमाण पुराणों का है। महाभारत में जिस कृष्ण का तेजस्वी, योगेश्वर व आप्तपुरुष का चरित्र प्रस्तुत है, उसे ब्रह्मवैवर्त पुराण व भगवत पुराण ने विकृत कर दिया। जिस राधा का महाभारत में एक बार भी नाम उपलब्ध नहीं है, उन प्रकरणकारों ने कृष्ण का उसके साथ अश्लील, अनैतिक व चरित्रहीनता का सम्बन्ध जोड़कर आने वाली पीढ़ियों के लिए सदाचारी, धर्मपालक व राष्ट्ररक्षक का कृष्ण का आदर्श ही छीन लिया व कृष्ण को लम्पट, छलिया व भोगी बना दिया।

प्रक्षेप की एक तीसरी विधि है—सच्चे अर्थों को बदलकर मनचाहे हानिकारक अर्थ कर देना। प्रमाण के तौर पर हम वाल्मीकि रामायण का यह श्लोक प्रस्तुत करते हैं—

एतत्तु दृश्यते तीर्थं सेतुबन्ध इति ख्यातम्। अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः॥

वा०रा०, युद्धकाण्ड, 69वां सर्ग

अर्थ—(विभीषण के राज्य-अभिषेक के पश्चात् श्रीराम पुष्पक विमान में भगवती सीता, भाई लक्ष्मण,

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय पर एसडीएम कोर्ट का फैसला

आचार्य विजयपाल को दिया सभा कार्यालय का कब्जा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ को आचार्य विजयपाल गुट को कब्जा देने के लिए मुख्य गेट की सील तोड़ते प्रशासनिक अधिकारी। (जागरण)

रोहतक। चार महीने 18 दिन, 5 पेज का फैसला और 30 तारीखों पर सुनवाई करने के बाद सोमवार सुबह ठीक 10 बजे एसडीएम की कोर्ट ने बहुचर्चित दयानन्दमठ के सिद्धान्ती भवन (कार्यालय) के मुकदमे पर अपना फैसला सुनाया। कोर्ट ने फैसला देते हुए कहा कि डॉ० सुनीति आर्या (वेदप्रकाश) को कार्यालय की बागडोर क्यों दी जाए? इस बारे में वह कोर्ट को कोई ठोस सबूत पेश नहीं कर पाई। जबकि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल (आचार्य बलदेव गुट) ने कोर्ट में काफी संख्या में ऐसे सबूत पेश किए। जिनको आधार मानकर कोर्ट इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि सिद्धान्ती भवन की कमान आचार्य विजयपाल को दी जाए। क्योंकि जब 24 दिसम्बर 2013 को सिद्धान्ती भवन को लेकर जब विवाद हुआ था तो उस समय कार्यालय का सारा कामकाज आचार्य विजयपाल ही संभाल रहे थे। उपमंडल मजिस्ट्रेट रोहतक अमरदीप जैन ने अपने रीडर को आदेश लिखवाने के निर्देश दिए और सुनवाई शुरू हुई। (हरिभूमि से साभार)

24 दिसम्बर 2013 को हुआ था विवाद :

कार्यालय की सभी प्रशासनिक व्यवस्थाएं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल संभाले हुए थे लेकिन 24 दिसम्बर 2013 को वेदप्रकाश गुट कार्यालय पर पहुँचा और वहाँ से सामान उठा लिया।

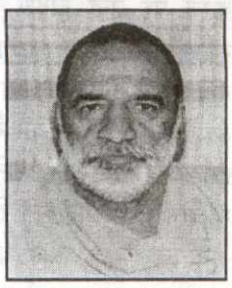

आचार्य विजयपाल

आचार्य विजयपाल ने ये सबूत एसडीएम कोर्ट में पेश किए :

आचार्य विजयपाल ने कर्मचारियों के वेतन, बैंक की कापियाँ, टेलीफोन, बिजली व पानी के बिल, साप्ताहिक पत्रिका के रूप में संपादक सत्यवीर शास्त्री, वार्षिक लेखा-जोखा, सभा की कार्यवाही, गुरुकुल कांगड़ी व यूजीसी से किए गए पत्र व्यवहार समेत कई दस्तावेज कोर्ट में प्रस्तुत किए जिससे कोर्ट ने 12 मई 2014 को उनके हक में फैसला दिया।

पांच पेज का फैसला दिया :

कोर्ट ने अपने पांच पेज के फैसले में बताया है कि किस तरह से एफ.आई.आर. दर्ज हुई और दोनों पक्षों ने कौन-कौन सबूत पेश किये। कोर्ट ने आदेश में कहा है कि डॉ० सुनीति ऐसे सबूत पेश नहीं कर पाई जिससे उनका कार्यालय पर हक बनता हो।

सुबह दस बजे बहुचर्चित मामले का फैसला सुनाया। शाम को विजयपाल गुट ने कार्यालय पर कब्जा लिया।

मासिक सत्संग का सफल आयोजन

दिनांक 4.5.2014 को दयानन्दमठ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित मासिक सत्संग का सफल आयोजन हुआ। सत्संग में मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान ब्र० राजसिंह रहे। विद्वान् वक्ता ने यज्ञ में आचमन, अंग-स्पर्श, आहुति प्रकरण आदि विषयों के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता ने ईश्वर, जीव, प्रकृति के स्वरूप पर प्रकाश डाला। मनुष्य का जन्म आनन्द प्राप्त करने के लिए हुआ है। आनन्द ईश्वर में है। अत: ईश्वर को जानना आवश्यक है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मंत्री मा० रामपाल आर्य ने कहा कि बड़ी प्रसन्नता की बात है कि सत्संग में शहर के अलावा आस-पास के ग्रामीण भी बड़ी संख्या में भाग ले रहे हैं। उन्होंने आगन्तुकों का धन्यवाद किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने कहा कि उन लोगों का सौभाग्य होता है और वे श्रेष्ठ आत्माएँ होती हैं जो सत्संग सुनने आते हैं। इस अवसर पर हरियाणा गोशाला संघ के प्रधान आचार्य योगेन्द्रआर्य, सर्वमित्र आर्य, स्वामी ब्रह्मानन्द, ब्र० दिनेश, श्री ओम्, सुरेन्द्र कालवा, संतराम, रणबीर बल्हारा, कर्णसिंह मोर आदि उपस्थित थे।

—सभामन्त्री

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज करीरा जिला महेन्द्रगढ़	20-21 मई 2014
2.	आर्यसमाज कनीना जिला महेन्द्रगढ़	7-8 जून 2014
3.	आर्यसमाज लोहारू जिला भिवानी	7-8 जून 2014
4.	आर्यसमाज जाडरा जिला रेवाड़ी	14-15 जून 2014

—सभामन्त्री

आर्यसमाज तिलकनगर रोहतक का एक और सराहनीय कार्य

रोहतक। वैसे तो आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक 12-13 वर्ष से घर-घर यज्ञ की ज्योति जलाने तथा वेदप्रचार का कार्य निरन्तर कर रहा है। लेकिन समय-समय पर विशेष सराहनीय कार्य भी करता है। जैसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में धन-बल का सहयोग, गुरुकुल चोटीपुरा, गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा), वानप्रस्थ आश्रम रोजड़ (गुजरात), कार्यकारिणी सभा अजमेर, गुरुकुल प्रभात आश्रम (मेरठ), आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा आर्यसमाजों को वार्षिक आर्थिक सहयोग, परन्तु इसके अतिरिक्त भी विशेष कार्य आर्थिक सहयोग, कोई भी संस्कार कार्य तथा नये आर्यसमाज स्थापित के कार्य भी निरन्तर करता रहता है। इस वित्त-वर्ष में आचार्य बलदेव जी के आशीर्वाद से, डॉ० जगदेवसिंह विद्यालंकार के संरक्षण में, प्रधान करतारसिंह सहारण के नेतृत्व में, मास्टर दयानन्द, सुभाष सांगवान, राजसिंह हुड्डा के सहयोग से श्री कंवरसिंह गुलिया के परिश्रम से, आर.एस. ज्योति गुरुकुल को सरण्डी (छत्तीसगढ़) में एक लाख रुपये के सहयोग से पीने का पानी का ट्यूबवैल लगवा रहे हैं। इस गुरुकुल में पीने का पानी नहीं होने से ब्रह्मचारी पड़ोस में जमींदारों से मांग-मांगकर पानी पी रहे हैं। एक विशेष सहराहनीय तथा प्रेरणादायक कार्य है तथा ये समाज ऐसे-ऐसे और भी कार्य करने के लिये प्रयत्नशील है जिसके लिये ये बधाई के पात्र है तथा समाज में अनुकरणीय है।

—सुखवीर सिंह दहिया,
आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक

thearyasamaj.org

वेद और सत्यार्थप्रकाश

गतांक से आगे....

आज धर्म के बारे में वैदिक-धर्मी आर्य समाजियों के पास धर्म सम्बन्धी समुचित जानकारी है, अब कोई भी तथाकथित धर्म, मत, मजहब, गुरुडम वाले अपनी शेखी नहीं बधार सकते। आर्य समाज ने समय-समय पर मत-मतान्तरों के लोगों व विद्वानों से जो प्रश्न किए थे उनका उत्तर भी देने के लिए कोई आगे नहीं आता। आर्यसमाज के विद्वान् वेदों व वैदिक साहित्य के आधार पर जिन सच्चाइयों को सामने रखकर संसार के मतों के प्रमुख विद्वानों को उसे स्वीकार करने के लिए चुनौती देते हैं, उसे भी अनसुना कर दिया जाता है। इसका एक ही कारण है कि सभी मतों को अपने मत की दुर्बलताओं का ज्ञान हो गया है।

अतः वह वाद, वार्तालाप, शंका-समाधान व शास्त्रार्थ कर सत्य को जानना, समझना नहीं चाहते क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें विवश होकर सत्य को स्वीकार करना पड़ सकता है। वह यह भी नहीं चाहते कि उनके मत का कोई व्यक्ति अपने मत को त्याग कर वैदिक धर्मी बने। इसका कारण उनका अपने मिथ्या विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों से अनावश्यक व अनुचित लगाव, मोह व राग है। ऐसा करके वह अपना वर्तमान जन्म व भावी जन्म बिगाड़ रहे हैं। यह जन्म हमें व उन्हें सत्य व असत्य के निर्णय करने के लिए मिला है। अज्ञानता से पूर्ण जीवन व्यतीत कर स्वार्थ सिद्ध करने के लिए नहीं। ऐसा करके वह अपना भावी जीवन बिगाड़ रहे हैं और अपने साथ अपने अनुयायियों के साथ भी अन्याय कर रहे हैं। ईश्वर की दृष्टि मे यह इसलिए छिपा हुआ नहीं है कि वह सर्वान्तरयामी है। वह सब कुछ देख और समझ रहा है और यथासमय इसका दण्ड सभी अनुचित कर्म व कार्य करने वालों को मिलेगा। हम विचार करने पर यह भी अनुभव करते हैं कि दुनियां के लोग वैदिक मत को भले ही न माने परन्तु कम से कम वह वैदिक धर्म के पैरोकार आर्य समाज के विद्वानों की युक्तियों, कथनों तथा प्रमाणों पर दृष्टि तो डाले, निष्पक्ष रूप से विचार करें और देखें कि सत्य क्या है? वैदिक मत की मान्यतायें व सिद्धान्त सत्य व उपादेय हैं अथवा उनके मत की मान्यतायें व सिद्धान्त सत्य व उपादेय हैं? यदि वह सत्य को जानेगें ही नही तो यह दोहरे अपराध की श्रेणी में आ सकता है जिस कारण उन्हें अधिक दुःख भोगना पड़ सकता है। उन्हीं को ही नहीं अपितु किसी भी व्यक्ति को, चाहे फिर वह आर्य समाज का अनुयायी ही क्यों न हों, वह भी कर्म-फल व्यवस्था के अनुसार दण्ड का भागी होने से दुःख भोगेगा। चिन्तन, विचार, ऊहापोह व वैदिक प्रमाणों से यह जाना गया है कि ईश्वर के यहां दया व करूणा तो है परन्तु पक्षपात व अन्याय नहीं है। वह ऐसा न्याय करता है जो न कम होता न अधिक। इसका प्रमाण चाहिये तो वह भी दिखा देते हैं। जन्म से एक व्यक्ति किसी निर्धन व अभावग्रस्त परिवार में जन्म लेता है व दूसरा एक धनी व साधन सम्पन्न परिवार में। इसका कारण हमारे प्रतिपक्षी हमें बतायें? यही नहीं अनेक जीवात्माओं को तो मनुष्य जन्म भी नहीं मिलता, वह पशु, पक्षी आदि क्यों बनाये गये हैं? हमारा उत्तर है कि वह पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि योनियों में अपने इस जन्म से पूर्व के मनुष्य जन्म के कर्मानुसार जन्म व सुख-दुख पाते हैं। यह समाज में सर्वत्र प्रत्यक्ष है। पशु व अन्य निम्न योनियां भोग योनियां है। इन योनियों में किए गये कर्मों का फल अगले जन्मों मे नहीं मिलता क्योंकि उन्हें कर्मो की स्वतन्त्रता नहीं है। फल केवल मनुष्य जन्म में किए गये कर्मो का ही मिलता है जिसका कारण मनुष्य को ईश्वर ने कर्म करने में स्वतन्त्र बनाया है और फल भोगने में वह परतन्त्र है। यह सब बातें वेद के आधार पर हैं जिनका ज्ञान आम व साधारण मनुष्य को सत्यार्थ प्रकाश से होता है। वेद की प्रत्येक बाद युक्ति, तर्क, ऊहापोह, चिन्तन व सृष्टिक्रम के अनुकूल होने से भी सिद्ध होती है।

अतः सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा ग्रन्थ है जो वेदों के स्वरूप, उनके महत्व, उनके उपयोग, उपादेयता व प्रासंगिकता को बताता है। सत्यार्थ प्रकाश वेद को देखने के लिए एक प्रकार से आंख व नेत्रों का कार्य करता है। यदि आंख न हो तो देख नहीं पाते, इसी प्रकार से यदि सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ महर्षि दयानन्द ने न बनाया होता तो सामान्य जन वेद के यथार्थ स्वरूप व महत्व को न जान पाते और साम्प्रदायिक विधर्मी मनमानी कर लोगों का धर्मान्तरण करते। यदि सत्यार्थ प्रकाश न लिखा गया होता तो आज संसार में जो धार्मिक क्रान्ति आयी है, वह कदापि न आई होती। सत्यार्थ प्रकाश के कारण ही आज हमारे प्रिय दलित भाईयों को वेदाध्ययन का अधिकार प्राप्त हुआ है। अनेक दलित भाई आर्य समाज में आकर पण्डित बन चुकें हैं। वेदों का अध्ययन कराते हैं। पुरोहित व बड़े-बड़े यज्ञों के यजमान व ब्रह्मा बनते हैं। आर्य समाज की क्रान्ति यहां तक सफल हुई है कि जिन भाईयों व बहिनों को वेद पढ़ने, सुनने व मन्त्रों का पाठ करने का अधिकार हमारे अज्ञानी पौराणिक भाईयों ने छीन लिया था, उनमें से कई दलित बन्धु व स्त्रियां आज वेदों के आचार्य, प्रवक्ता व वेदभाष्यकार हैं। यहां तक कि कुछ मुस्लिम बहिनों ने भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी मे संघर्ष कर वेदाधिकार प्राप्त किया और वेद पढ़े। ईश्वर अपने पुत्रों की इस योग्यता पर प्रसन्न होकर महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के विद्वानों को जिन्होंने गुरूकुलों की स्थापना कर उसका संचालन किया व कर रहे हैं, उन्हें अपना आशीष प्रदान कर रहे हैं और मौन रूप से प्रसन्न होकर कह रहे हैं कि मेरे वास्तविक उत्तराधिकारी आर्य समाज के सच्चे व निःस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले सदस्य, अधिकारी व विद्वान हैं। स्वामी श्रद्धानन्द, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, पं. जगदेव सिंह सिद्धान्ती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आचार्या प्रज्ञा देवी, आचार्या मेधादेवी, आचार्या सूर्यदेवी चतुर्वेदा, आचार्या नन्दिता शास्त्री आदि अनेक विद्वान व विदुषी बहने हैं।

हम यहां यह भी कहना चाहते हैं कि पुरूष ही नहीं आर्य समाज में हमारी बहनें व मातायें भी पुरूषों से पीछे नहीं है। बहिन आचार्या सूर्यदेवी जी के बारे में हमारा व हमारे एक आचार्य मित्र का मानना है कि उनमें वेदभाष्यकार होने की योग्यता है। हमने भी उनसे यजुर्वेद, सामवेद या किसी एक व सभी चार वेदों पर वेद-भाष्य का प्रणयन करने का निवेदन किया था। परन्तु अनेक कार्यो में व्यस्त होने के कारण वह इसे स्वीकार नहीं कर सकीं। यदि वह एक वेद का भी संस्कृत-हिन्दी व केवल हिन्दी में भाष्य कर देतीं तो आर्य समाज गर्व से सनातन धर्म व पौराणिक समाज के लोगों को कह सकता था कि जिन बहनों व माताओं से उन्होंने वेदाध्ययन के अधिकार को छीना था, उन्हीं को महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के अनुयायी विद्वानों ने उनमें से एक को वेदभाष्यकार बना दिया। आज वेद-विदुषी बहनें तो आर्य समाज में इतनी हैं कि उनकी गणना करना सम्भव नहीं है। इसका श्रेय सत्यार्थ प्रकाश को सर्वाधिक है जो वेदों का महत्व जन सामान्य में प्रकट करता है।

इस लेख में ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद के महत्व व इसको जन-जन तक पहुंचाने में सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका व उसके प्रभाव को अंकित करने का प्रयास किया गया है। लेख की उपादेयता का मूल्यांकन सुविज्ञ पाठकों के हाथों में है।

-मनमोहन कुमार आर्य, 196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोनः 09412985121

स्व० चौ० दलीपसिंह की स्मृति में शान्तियज्ञ का आयोजन

स्व० चौ० दलीपसिंह सुपुत्र चौ० बारूराम का 90 वर्ष की आयु में कुछ समय से अस्वस्थ रहने से दिनांक 23.04.2014 को निधन हो गया जिनकी स्मृति में उनके पुत्रों ने अपने निवासस्थान 60/8 कृपाल नगर निकट सैनी डिग्री कालेज रोहतक में दिनांक 04.05.2014 को शान्तियज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यवीर सिंह शास्त्री, यज्ञ के प्रबन्धकर्त्ता श्री महेन्द्रसिंह जी धनखड़ पूर्व डीआरओ। इस अवसर पर स्व० दलीपसिंह के तीनों पुत्र जयसिंह हुड्डा, राजसिंह हुड्डा व वीरेन्द्रसिंह हुड्डा परिवार सहित यजमान थे। इस शान्ति यज्ञ में गांव सांघी व सामाजिक कार्यकर्त्ता उपस्थित थे जो कि यजमान परिवार के दादा जी चौ० बारूराम 1932 में बालसमन्द जिला हिसार में मुख्याध्यापक थे। बाद गांव सांघी की आर्य पाठशाला की कमेटी के सक्रिय सदस्य थे। 1954 में ग्राम सुधार समिति के भी मेम्बर रहे। यह परिवार बहुत पुराना शिक्षित परिवार है। यज्ञ के पश्चात् यज्ञ के ब्रह्मा सत्यवीर सिंह शास्त्री ने अपने मधुर प्रवचन से जन्म-मृत्यु, पाप-पुण्य तथा प्रारब्ध के विषय में यज्ञप्रेमी सज्जनों को बतलाया। चौ० महेन्द्र सिंह धनखड़ जी ने धार्मिक परिवार व समाजसेवा के लिये परिवार के भविष्य में भी पूर्वजों के मार्ग का अनुसरण करने को बतलाया और उनकी स्मृति में एक त्रिवेणी (बड़, पीपल व नीम) लगाने के लिये कहा ताकि प्रदूषण मुक्त जलवायु बना रहे। यज्ञ के पश्चात् डॉ० सत्यवीर सिंह ने बड़े पुत्र जयसिंह को रस्म पगड़ी बांधकर समाज में परिवार की जिम्मेदारी निभाने की सामाजिक रस्म अदा की गई। यजमान परिवार ने सभी यज्ञप्रेमियों का इस समय सहयोग करने का धन्यवाद किया और सभी को धार्मिक पुस्तक श्रीमद्भागवत गीता वितरित की और सभी के लिए भोजन की व्यवस्था भी की गई। दो मिनट के मौन के उपरान्त शान्तिपाठ के बाद शान्तिसभा का समापन किया गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को सद्गति और परिवार और समाज को जो दुःख हुआ है उसे सहन करने की शक्ति प्रदान करे। -**भलेराम आर्य, सांघी (रोहतक)**

thearyasamaj.org

कैसा धन ?

एन्द्र सानसि रयिं सजित्वानं सदासहम्।
वर्षिठमूतये भर॥ 5॥

हे **इन्द्र**=परमैश्वर्यशाली प्रभो! **रयिं आभर**=हमें धन प्राप्त कराइए। कैसा धन? 1. **सानसिम्**=सम्भजनीय धन। धन को मैं अकेला ही न खा लूँ। मैं उसका पञ्चयज्ञों में विनियोग करके यज्ञशेष को खाने वाला बनूँ। **केवलाघो भवति केवलादी**=अकेला खाने वाला पापी होता है—मैं इस तत्त्व को न भूलूँ। 2. **सजित्वानम्**= उस धन को, जो मुझे सदा विजयशील बनाता है, जिस धन को पाकर मैं इन्द्रियों का दास नहीं बन जाता। 3. **सदासहम्**-जो धन सदा कामादि वासनाओं का अभिभव करने वाला है। जिस धन से मैं लोभाभिभूत हो सदा मारा-मारा नहीं फिरता। 4. **वर्षिष्ठम्**=जो धन सदा अतिवृद्ध है और खूब बरसने वाला है। धन की मात्रा भी मेरे पास पर्याप्त हो और मैं उसका खूब दान करने वाला बनूँ। बस, ऐसा ही धन तो **ऊतये**=हमारी रक्षा के लिए होता है।

इन उल्लिखित गुणों से युक्त धन नाश का कारण न बनकर कल्याण का साधक होता है। इस स्थिति में मैं 'मधुच्छन्दा'=उत्तम इच्छाओं वाला, 'वैश्वामित्रः'= सभी का मित्र होता हूँ।

भावार्थ—हम सदा औरों के साथ बाँटकर धन का उपभोग करें। बादल जल जुटाते-जुटाते काला होता जाता है, बरसता है तो सफेद हो जाता है। हम भी बरसने पर ही शुभ्र होंगे।

(साभार-सामवेदभाष्यम्) —आचार्य बलदेव

कुल्हाड़ी और वृक्ष

बड़े नाज़ बड़ी शान से।
कुल्हाड़ी पेड़ से बोली बड़े गुमान से॥
छोटी हूँ पर तुझे काट सकती हूँ।
छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट सकती हूँ॥
विषाद की रेखायें घिरी वृक्ष के मुख पै।
कसमसाकर कहा उसने बड़े दुःख से॥
वृक्ष बोला-आज तेरी शक्ति में जो तेरे संग है।
वह मेरा ही कटा हुआ अंग है॥
किसको सुनायें इस मन का दुःखड़ा।
अपना ही जब कोई गैरों से जुड़ता है॥
सच मानिए मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ता है।

भेंटकर्त्ता :-
सूबेदार करतारसिंह
आर्य सेवक
आर्यसमाज गोहाना
मण्डी (सोनीपत)

मन ही मन समझले सो देवता,
इशारे से जो समझ जाये सो इन्सान।
और जो कहे से भी समझे वह मूर्ख पशु के समान है।
'सहजो' या जग आइकै रहियो जीभ की नाई।
घणौ घी भक्षण करै तो भी चीकणी नाहीं॥
बशर को होश आता है, वक्त गुजर जाने के बाद।
आदमी सम्भलता है, उमर ढल जाने के बाद॥
कभी नहीं सोचा तूने बैठ के अकेले में।
कौन तेरा, तू है किसका, दुनिया के मेले में॥
कौन साथ आया तेरे, कौन साथ जायेगा,
लाया था क्या, ले जायेगा, डाल करके थेले में॥
क्या किसी से लिया तूने क्या किसी को दे दिया,
जीवन ही समाप्त किया, इसी दे दे ले ले में॥
सुख-दुःख हानि-लाभ शोक-हर्ष जीत-हार।
यही दो उपलब्धियां हैं, जगत् के झमेले में॥
जीवन का उद्देश्य यदि 'प्रेमी' नहीं जाना तू,
हीरा जन्म लुटा दिया, फूटी कौड़ी धेले में॥

साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद व जातिवाद की हार

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

2014 लोकसभा चुनाव कई मायनों में विशेष रहा। इस तरह से भी कि इसमें साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद व जातिवाद की हार हुई। आजादी से पहले ही कांग्रेस वर्ग विशेष की भावनाओं को भड़काती आई है। कांग्रेस के उस वर्ग विशेष के प्रति स्वार्थमयी अति मोह का ही परिणाम रहा कि उस वर्ग में अनेक शक्तियां व संगठन ऐसे पनप गए जो स्वयं को मुख्यधारा से अलग समझने लगे तथा आजादी से पहले ही अलगाववाद की मांग उठने लगी। गांधी जी का इस वर्गविशेष के प्रति यह अविवेकपूर्ण एकाङ्गी मोह स्वयं को देवत्व की श्रेणी में स्थापित करने के लिए था और बाद में यह मोह वोट के स्वार्थ में बदल गया।

ध्यान देने योग्य बात है कि इस मोह से न तो गांधी जी देवत्व की श्रेणी में बैठ पाए, न ही उन्हें उस वर्ग का कोई सम्मान मिला, न ही उस वर्ग का व देश का ही इससे भला हुआ। बुद्धिजीवियों द्वारा गांधीवादी दर्शन की पर्याप्त आलोचना हुई है। इतना करने के बाद तो उस वर्ग विशेष द्वारा गांधी जी को अपने पूज्य महापुरुषों की श्रेणी में बैठाना चाहिए था, गांधी जयन्ती का आयोजन पर्व के रूप में करना चाहिए था, लेकिन क्या ऐसा हुआ? इसके विपरीत महर्षि दयानन्द सैयद अहमद खां जैसे नेता की कितनी प्रशंसा व श्रद्धा बटोर गए इससे यही सिद्ध होता है कि वर्ग विशेष का कल्याण हम राष्ट्रीय शिक्षा, संस्कृति से जोड़कर कर सकते हैं न कि उनकी भावनाओं का दोहन स्वार्थ के लिए करके।

भाजपा ने श्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार क्या घोषित किया कांग्रेस, सपा, बसपा आदि ने पूरे देश में साम्प्रदायिक भावना भड़काने वाले बयान देने आरम्भ कर दिए। इस देश में हिन्दुत्व, हिन्दी, भगवाँ, राम, कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग मानना आदि बातें करना भी साम्प्रदायिकता माना जाता है। अब विचार कीजिए कि ऐसा मानने वाले वर्ग विशेष को किस सीमा तक अलगाववाद की खाई में धकेल देते हैं। उपरोक्त पार्टियों के बयान केवल मुस्लिम वोट हथियाने के लिए थे। इन्हें इस बात का कोई अनुमान नहीं था कि इनके ऐसे बयानों से वर्गभेद की खाई कितनी गहरी हो सकती है। आप नेता साजिया इल्मी ने तो मर्यादा की सारी सीमाएं लांघ डाली। उसने बयान दिया कि मुसलमानों को अब 'सैक्यूलर' नहीं रहना चाहिए। परिणाम क्या हुआ वह न केवल हारी बल्कि जमानत भी जब्त हो गई। उत्तर प्रदेश में जहाँ मुस्लिम वोटों की भरमार है वहां मुसलमानों की भावना भड़काने वाले सब का (=समाजवादी, बसपा, कांग्रेस) सूपड़ा साफ हो गया यह साम्प्रदायिकता की हार हुई है।

इस चुनाव ने यह भी सिद्ध किया कि जाति विशेष का हितैषी या जाति विशेष का विरोधी होना भी जीत की गारंटी नहीं है। मायावती ने तिलक, तराजू, तलवार को गालियां निकालीं। क्या हश्र हुआ? हरयाणा में हजकां सुप्रीमो ने जाति विशेष का विरोध महंगा पड़ा व उन्होंने स्वयं की हिसार सीट भी गंवा दी।

आपके लिए यह बात भी महत्त्वपूर्ण नहीं रहती कि आपने किस क्षेत्र में कितने दिन शासन किया है, अपितु यह बात महत्त्वपूर्ण है कि कैसा शासन किया है, आपकी राजनीतिक मर्यादा, स्थिरता कितनी है। इसी तथ्य के मद्देनजर 'बागपत' की जनता ने अजीतसिंह को पटखनी दे दी। बिहार में लालू को मुंह की खानी पड़ी।

अपवाद तो सदा रहते हैं, लेकिन कुल मिलाकर इस चुनाव में साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद व जातिवाद की हार हुई है। कुल मिलाकर विकास की राजनीति होनी चाहिए तथा विकास की सबको आवश्यकता है। अब बारी है श्री नरेन्द्र मोदी की, जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की।

यज्ञ-सत्संग का आयोजन

दिनांक 27.4.2014 रविवार के दिन गाँव अटायल जिला रोहतक में समेराम आर्य की स्मृति में जगवीरसिंह के घर पर डॉ. जगदेवसिंह विद्यालंकार के ब्रह्मत्व में यज्ञ-सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें आर्यसमाज अटायल के पदाधिकारी श्री उदेसिंह तथा अन्य पुरुष, महिलायें तथा बच्चों ने भाग लिया। सुशील कुमार आर्य, बहन दयावती तथा श्री महावीर शास्त्री ने मधुर ईश्वर भक्ति तथा देशभक्ति के गीत सुनाये। श्री राजेन्द्र शास्त्री महम, सुभाष सांगवान, रणवीरसिंह मान, राजसिंह हुड्डा ने सक्रिय भाग लिया तथा शान्तिपाठ के बाद सात्त्विक लंगर का आयोजन श्री दयानन्द, जगवीर, सतवीर, लक्ष्मण, बलवीर आदि द्वारा किया गया।

—सुखवीर सिंह दहिया, आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक

thearyasamaj.org

भाजपा को स्पष्ट जनादेश, देशभर में चला मोदी मैजिक

अब मोदी युग

देश में उत्तर से दक्षिण तक नरेन्द्र मोदी की लहर पर सवार भाजपा ने तीस साल का रिकार्ड तोड़ते हुए पूर्ण बहुमत हासिल किया। मोदी की सुनामी में बहकर कांग्रेस नीत यूपीए 60 सीटों में सिमट गई है।

भाजपा का यह अपना अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन है। भाजपा ने अकेले ही बहुमत के लिए 272 का आंकड़ा पार करते हुए 283 सीटें जीत ली। करीब 10 राज्यों में भाजपा ने बाकी पार्टियों का सुपड़ा साफ कर दिया है। दिल्ली, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, गोआ में तो दूसरी पार्टियों का खाता भी नहीं खुला। मध्यप्रदेश में भी पार्टी ने शानदार प्रदर्शन किया और यहां कांग्रेस के सिर्फ दो प्रत्याशी जीत सके। वहीं, कांग्रेस की आजादी के बाद सबसे बड़ी हार है। पार्टी सिर्फ 44 सीटें ही जीत सकी। जबकि सत्तारूढ़ यूपीए गठबंधन को मात्र 60 सीटें मिल सकीं।

उत्तर प्रदेश में भाजपा की सुनामी चली और 80 में से 73 सीटों पर भाजपा ने कब्जा किया। हरियाणा में भी भाजपा ने इतिहास रचते हुए पहली बार सात सीटें जीतीं। पंजाब में पार्टी सिर्फ दो सीटें जीत सकी। यहाँ पार्टी के बड़े चेहरे अरुण जेतली अमृतसर में कैप्टन अमरिन्दर सिंह से चुनाव हार गए।

जीत के बाद अपनी मां से आशीर्वाद लेते नरेन्द्र मोदी।

सबसे पहले माँ से लिया आशीर्वाद

नरेन्द्र मोदी ने चुनाव जीतते ही सबसे पहले अपनी माँ हीराबा के चरण स्पर्श किए और आशीर्वाद लिया। इस मौके पर उनकी हीराबा ने कहा कि मेरा आशीर्वाद हमेशा उसके साथ। वह देश को विकास के पथ पर ले जाएगा। जीत के जश्न के बीच हीराबा ने दो लोगों की मदद से भगवान् सूर्य की पूजा की। इस दौरान पीएम पद के उम्मीदवार मोदी परिवार ने परिवार के बाकी सदस्यों के बाद भी कुछ वक्त गुजारा और अपनी मां से बातचीत की। उनकी मां दूसरे बेटे पंकज मोदी के साथ गांधीनगर में रहती है। उन्होंने अपने भाई के बच्चों से भी बात की।

(हरिभूमि से साभार)

चाय बेचने वाले से लोकप्रिय नेता बने मोदी

भाजपा के लालकृष्ण आडवाणी जैसे वरिष्ठ और वयोवृद्ध नेता तथा अन्य के विरोध का सामना करने के बावजूद 63 वर्षीय संघ प्रचारक मोदी ने सोलहवीं लोकसभा के चुनाव के लिए देशभर में ऐसा अथक अभियान चलाया जिस पर सवार होकर भारतीय जनता पार्टी ने अपना अब तक का सबसे बढ़िया प्रदर्शन किया। देश की राजनीति में पिछले तीन दशक से मौजूद रही पार्टी अभी तक कभी इतनी शानदार जीत दर्ज नहीं कर पाई थी। एक कुशल योजनाकार मोदी ने, रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने वाले से लेकर भारत का एक लोकप्रिय नेता बनने तक का सफर बड़ी सफलता से पूरा किया। हालांकि उनके बहुत से विरोधी उनके इस दावे से सहमत नहीं हैं।

संघ परिवार की 'हिन्दुत्व की प्रयोगशाला' माने जाने वाले राज्य गुजरात में मोदी ने मुख्यमंत्री के तौर पर अपनी छवि एक कट्टरपंथी की बनाई थी जो लगातार तीन बार चुनाव दल चुनाव अपनी विजय का परचम लहराता रहा। हालांकि लोकसभा चुनाव में अल्पसंख्यकों, खासतौर पर मुसलमानों का समर्थन हासिल करने के लिए उन्होंने जानते बूझते अपनी कट्टर हिन्दुत्ववादी छवि को त्याग दिया और अपना पूरा ध्यान विकास के मुद्दे, खासतौर से गरीब मुसलमानों के विकास पर केंद्रित किया।

गुजरात के महसाणा के ऐतिहासिक वादनगर शहर में पिछड़े 'मोध घांची' (तेली) समुदाय में जन्मे मोदी का उभार एक असाधारण घटना है हालांकि उनके बहुत से विरोधी उनके पिछड़े समुदाय से संबद्ध होने की बात को भी नहीं मानते। गौतम बुद्ध और स्वामी विवेकानन्द के जीवन और शिक्षाओं से सबक लेने वाले मोदी ने काफी युवावस्था में ही अपना वादनगर का घर छोड़ दिया था और एक प्रचारक के तौर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए थे।

चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

युवकों के लिए

दिनांक : सोमवार 2 जून से रविवार 8 जून 2014 तक
स्थान : चौ० लखीराम आर्य अनाथालय एवं दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक
उद्घाटन : सोमवार 2 जून 2014 को सायं 6 बजे
समापन समारोह : रविवार 8 जून 2014 को प्रात: 10 बजे से 1 बजे तक

युवतियों के लिए

दिनांक : सोमवार 23 जून से रविवार 29 जून 2014 तक
स्थान : वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर, रोहतक
उद्घाटन : सोमवार 23 जून 2014 को सायं 6 बजे
समापन समारोह : रविवार 29 जून 2014 को प्रात: 10 बजे से 1 बजे तक

शिविर में प्रवेश के लिए नियम

1. दोनों शिविरों के लिए शिविरार्थी की आयु 10 से 20 वर्ष के बीच होनी चाहिए।
2. शिविरार्थी को शिविर में प्रवेश से समापन तक (दिन-रात) शिविर में ही रहना होगा।
3. प्रवेश शुल्क 100 रुपये तथा आर्यवीर विजय पत्रिका वार्षिक शुल्क 70 रुपये (कुल 170 रु०) प्रत्येक आर्यवीर/वीरांगना को पंजीकरण के समय देने होंगे।
4. शिविर में भोजन व्यवस्था नि:शुल्क होगी तथा भोजन के लिए बर्तन-थाली, कटोरी, गिलास, चम्मच आदि साथ लावें।
5. युवक शिविरार्थी अपनी वेशभूषा में खाकी नीकर (हाफ पैंट) दो सफेद बनियान, लंगोट, काला कच्छा, पी.टी. शूज, सफेद जुराब, कान तक की लाठी, कापी-पैन, ऋतु अनुकूल बिस्तर व पहनने के सादा कपड़े साथ लाएँ। कोई कीमती वस्तु व आभूषण साथ न लाएँ।
6. शिविरार्थी वीरांगनायें अपनी वेशभूषा में दो सफेद कमीज, दो सफेद सलवारें, सफेद दुपट्टा आदि तथा पी.टी. शूज, सफेद जुराब, कापी-पैन, ऋतु अनुकूल बिस्तर व पहनने के अन्य सादा कपड़े साथ लाएँ। कोई कीमती वस्तु व आभूषण साथ न लाएँ।
7. शिविर में अनुशासन का पालन करना होगा। अनुशासनहीनता करने वाले/करने वाली को तत्काल शिविर से निष्कासित कर दिया जावेगा।
8. सभी आर्यवीरों को सोमवार 2 जून 2014 को सायं 5 बजे तक आवश्यक सामान सहित शिविर स्थल **दयानन्दमठ रोहतक** में तथा सभी आर्य वीरांगनाहों को सोमवार दिनांक 23 जून 2014 को सायं 5 बजे तक आवश्यक सामान सहित **वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक** में पहुँच जाना चाहिए।
9. कृपया दोनों शिविरों में प्रवेश हेतु युवक/युवतियों का पंजीकरण शीघ्र करवा लें क्योंकि प्रवेश सीमित है।

देशराज आर्य, मण्डलपति **ओमप्रकाश आर्य,** मन्त्री

आयोजक : आर्य वीर दल, रोहतक मण्डल

सम्पर्क सूत्र : 9215212533, 7206657056, 9466749992, 9466749993, 253214, 9416211809, 9416272732, 9315539282

thearyasamaj.org

सर्वशिक्षा अभियान बना सर्वभिक्षा अभियान

आज छात्र सरकारी स्कूल में पढ़ने नहीं जाता बल्कि मध्याह्न भोजन और अनेक प्रकार की छात्रवृत्तियों व सुविधा की भीख लेने व कुछ समय घूमने फिरने जाता है। शिक्षा ही वह वस्तु है जो मनुष्य को ज्ञान विज्ञान व संस्कार देकर सुख समृद्धि के मार्ग पर चला देती है लेकिन आज शिक्षा के नाम पर ही शिक्षा की ऐसी दुर्गति की गई है कि पहले तो व्यक्ति का शिक्षित होना ही कठिन है क्योंकि शिक्षकों को शिक्षा के इतर इतने काम दे दिए गए हैं कि उनके पास शिक्षा के लिए समय ही नहीं बचता।

शिक्षकों को दर्जनों प्रकार की छात्रवृत्तियों के लेखा बनाने, वितरण करने, मध्याह्न भोजन का प्रतिछात्र प्रतिदिन एक एक ग्राम का लेखन, तोल, संभाल करना, विद्यालय भवननिर्माण कराना, मिस्त्री मजदूरों को लाना, उनकी निविदा मांगना, भवन सामग्री की निविदा मांगना, स्वच्छता, भ्रूणहत्या, एड्स, जनसंख्या, शिक्षा व जनगणना, वोट बनाना, मतदान कराना, जिला राज्य व खंडस्तर पर कई-कई दिनी शिविरों व संगोष्ठियों में जाना, प्रतिदिन सभी बातों की डाक तैयार कर तुरन्त अधिकारियों को पहुंचाना। ये काम ही पूरे नहीं हो पाते, फिर शिक्षा की क्या बात रह गई ? ऊपर से किसी भी बच्चे को ताड़ना धमकाना अपराध। बिना प्रमाणपत्र के आयु देखकर कक्षाओं में प्रवेश देना, किसी को फेल नहीं करना। स्कूलों में शिक्षकों की शिकायत के लिए पुलिस के फोन नं. अंकित करना। ऐसी स्थिति में कोई क्यों पढ़ेगा और क्यों पढ़ाएगा ? फिर भी शिक्षक कुछ न कुछ सिखा देता है तो उसकी महानता ही है। पाठ्यक्रम भारी अवैकल्पिक व अरुचिकर है अत: विशाल शिक्षा विभाग, शिक्षा बोर्ड, निरीक्षणदल होते हुए भी शिक्षक भक्षक बनकर शराब व मुर्गे खा पीकर पैसे व सुविधाएं लेकर योजनाबद्ध तरीके से नकल कराते हैं। परीक्षाएं निपट जाती हैं, प्रमाणपत्र मिल जाते हैं। जुगाड़ से नौकरियाँ भी मिल जाती हैं, लेकिन ऐसी व्यवस्था से निकला युवा कैसा कर्मचारी अधिकारी या शिक्षक बनता है यह सबके सामने है।

दूसरी ओर निजी विद्यालयों की लूट है। ट्यूशन संस्कृति है। अंग्रेजी माध्यम हावी है। सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के बावजूद गरीबों को निजी विद्यालयों में प्रवेश नहीं मिलते हैं। निजी विद्यालयों से निकले सपूत डाक्टर बनते हैं तो रोगियों के गुर्दे तक निकाल लेते हैं। दवा वितरक कम्पनियों की घटिया दवा लिखते हैं। इंजीनियर बनते हैं तो निर्माणसामग्री खा जाते हैं। देश को बचाने का एक ही उपाय है-'**गुरुकुल शिक्षाप्रणाली**' की नि:शुल्क, अनिवार्य, रुचि अनुसार समान शिक्षा। राजा हो या रंक, समान भोजन छादन व शिक्षा। वैकल्पिक रोचक हल्के पाठ्यक्रम। हस्तशिल्प, छोटी मशीनों के अभ्यास भी हों। नियमित दिनचर्या, उत्तम वातावरण, उत्तम शिक्षकों द्वारा संस्कारमय शिक्षा। संस्था से शिक्षक दें रोजगार। सरकार कराए प्रतिवर्ष सामूहिक विवाह, जिससे दहेज व भ्रूणहत्या स्वत: खत्म होंगे। समाज में शांति होगी। स्वत: क्रान्ति होजाएगी। वोटों के लिए दिखावे बंद हों। —**महावीर धीर,** अध्यक्ष, वैदिक विश्व न्यास, प्रेमनगर, रोहतक

महाघोटाला... पृष्ठ 2 का शेष....

विभीषण, सुग्रीव व हनुमान संग बैठकर अयोध्या को जब लौट रहे थे तो श्री राम ने सीता का विमान से नीचे व दाएं-बाएं के उन स्थानों का परिचय देते हुए कहा, जहाँ-जहाँ सीता की अनुपस्थिति में महत्त्वपूर्ण कार्य किये थे)।''हे वैदेहि! यह समुद्र का दूसरा तट=उत्तर-तट दिखाई दे रहा है जो सेतुबंध के नाम से प्रसिद्ध है।

यह वह स्थान है, जहाँ पर सर्वव्यापक देवों के देव महादेव परमात्मा ने हमारे ऊपर कृपा की थी (जिसके सहाय से समुद्र पर पुल बनाकर हम तुम्हें ले आए)।''

इस श्लोक में पौराणिक शिव देवता का तनिक भी संकेत व अर्थ नहीं है परन्तु पौराणिक कथित विद्वानों, लेखकों व प्रचारकों ने इस श्लोक में प्रयुक्त महादेव शब्द का अर्थ शिव प्रस्तुत करने का दुष्कार्य करके यह मान्यता स्थापित कर दी है—''राम जी तो शिव के भक्त थे। शिव जी की कृपा से राम को सफलता मिली थी।''

इससे मिलता-जुलता एक और प्रसंग हमारे कथन का प्रमाण है—

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च।
समः शिवाय च शिवतराय च॥

य० 16/41

इसमें आए शंकर व शिव शब्द परमपिता परमात्मा के शान्ति व कल्याण कारक अर्थों में आए हैं परन्तु पौराणिक पंडितों ने पूर्वोक्त शिव बाबा के अर्थ में प्रचलित कर दिए। 'ओं नमः शिवाय' का अर्थ रहित जप करते हुए शिवरात्रि के दिन आप पौराणिकों की देख सकते हैं।

गंगाजल में यत्र-तत्र प्रदूषण हुआ व हो रहा है। हुगली के किनारे पर खड़े व्यक्ति को शुद्ध जल दो तरीकों से मिल सकता है। प्रथम वह गंगा के आदि स्रोत पर जाए, जहां हर समय शुद्ध जल उपलब्ध है। दूसरा तरीका यह है कि वह अपने नगर की गंगा को जल को फिल्टर, छलनी या एक वस्त्र से छानकर शुद्ध रूप में ग्रहण करे अन्यथा अशुद्ध जल से वह अस्वस्थ है व रहेगा ही। वैदिक ज्ञान की मान्यताओं व इतिहास के तथ्यों के प्रक्षिप्त तट पर खड़े हमें ज्ञान के आदिस्रोत अर्थात् वेदों की ओर वापिस मुड़ना चाहिए या जिस रूप में आज ग्रन्थ हमें मिल रहे हैं, उन्हें तर्क, प्रमाण, ऊहा व युक्ति की छलनी से छानकर ही ग्रहण करें क्योंकि ये ग्रन्थ विष सम्प्राप्तान्न तुल्य हेय एवं त्याज्य है। राजनैतिक व आर्थिक घोटाले बाज आज दनदना रहे हैं। धार्मिक व ऐतिहासिक घोटालेबाजों ने विगत् छ: सहस्र वर्षों से हमारे समाज के मन, मस्तिष्क व आत्मा को अपंग बना रखा है। ये ज्ञान-घोटाले अन्य प्रकार के घोटालों के जन्मदाता हैं। शुद्ध ज्ञान से शुद्ध आचरण का जन्म होता है। अत: ज्ञान गंगा में पड़े प्रदूषण को दूर करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। हम शुद्ध जल ही नहीं, शुद्ध दूध, शुद्ध आटा, शुद्ध सब्जी व शुद्ध दाल-चावल की इच्छा व प्रयत्न करते हैं तो शुद्ध ज्ञान व शुद्ध आदर्श, शुद्ध सिद्धान्त व शुद्ध मान्यताओं की इच्छा व प्रयत्न क्यों नहीं करते।

भ्रष्टाचार मुक्त लोकपाल बिल... प्रथम पृष्ठ का शेष...

पास हो गया अब देखना है कि देश से भ्रष्टाचार को समाप्त करने में यह बिल कितना कारगर साबित होता है। दिल्ली में गैंगरेप के बाद गैंगरेप के सम्बन्ध में लोगों ने सारे देश में बड़े प्रदर्शन किये, लोग सड़कों पर उतरे, उसके बाद सरकार ने सख्त कानून तो बना दिया, परन्तु रेप के केसों में उसके बाद और बढ़ोतरी हो गई, रेप केशों में एक रिक्शा चालक से लेकर, अधिकारी, नेता, न्यायाधीश, पत्रकार आदि कोई भी पीछे नहीं रहा है। रक्षक पिता से लेकर पुलिस तक भक्षक बन रहे हैं। चण्डीगढ़ का अभी ताजा ही केस है। कहीं ऐसा ही न हो कि लोकपाल बिल के आने पर भी भ्रष्टाचार भी इसी तरह कहीं और न बढ़ जाये। भ्रष्टाचार को कानून नहीं मिटा सकता, जब तक कानून को एम्पलीमेंट करने वाले ईमानदारी से उस कानून को इम्पलीमेंट न करें। कानून तो देश में पहले से ही बहुत हैं, परन्तु किसी भी भ्रष्टाचार पर रोक नहीं लग पाई है। कितनी कम्पनियां जनता के धनों को लेकर गायब हो चुकी हैं। टी.वी. समाचार पत्रों में रोज कोई नया काण्ड सामने आता है। आज कानूनों में परिवर्तनों से कुछ नहीं होने वाला है जब तक लोगों की मानसिकता में परिवर्तन न आये। जनता की सोच जब तक नहीं बदलती तब तक भ्रष्टाचार से मुक्त देश बनना बड़ा ही कठिन है। देश का नाम भ्रष्टाचार में सुर्खियों में आ गया है। कभी यह देश आध्यात्मिकता के क्षेत्र में सबसे आगे था। आज भी देश में आध्यात्मिक गुरुओं की कमी नहीं है, परन्तु इतने गुरु हैं, उनमें से कुछ जनता का किस प्रकार शोषण कर रहे हैं, यह बात किसी से छुपी नहीं है। देश की शिक्षा प्रणाली इसके लिए दोषी है। हम अपने बच्चों को क्या शिक्षा दे रहे हैं, इस पर किसी का ध्यान नहीं जाता, शिक्षा मानव का निर्माण करती है, परन्तु आधुनिक शिक्षा मानव का निर्माण नहीं सिर्फ डाक्टरों, इंजीनियरों आदि का निर्माण कर रही है। देश के डाक्टरों, इंजीनियरों आदि की बहुत आवश्यकता है, क्योंकि इनके बगैर देश उन्नति नहीं कर सकता, लेकिन हमारी शिक्षा प्रणाली से जो मानव निर्माण की शिक्षा थी, वह गायब हो गई। हम मैकाले को दोष देते नहीं थकते परन्तु उसको बदलने का किसी ने प्रयास नहीं किया। अब मैकाले देश में ही बैठे हैं, इनकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। सिर्फ हमने अपने दोष को स्वीकार करने के स्थान पर दूसरों को ही दोष लगाते हैं और ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं, जो समाज व देश को बुरा सन्देश जाता है। देश से वास्तव में यदि भ्रष्टाचार मिटाना है तो ईमानदारों को इस आन्दोलन में घर से बाहर निकलकर भाग लेना होगा अन्यथा कोई साधन नहीं है।

thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकाश के कुछ उपयोगी अंश

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

डॉ० भवानीलाल जी भारतीय ने **'दयानन्द सूक्ति-मुक्तावली'** नामक पुस्तक लिखी है। इसको मैंने आदि से अन्त तक अच्छी प्रकार पढ़ा है। पुस्तक अति उत्तम है। मैं यह समझता हूँ कि भारतीय जी ने इस पुस्तक को लिखकर केवल आर्यसमाजियों का ही नहीं बल्कि पूरे मानव समाज का उपकार किया है।

इसमें भारतीय जी ने महर्षि दयानन्दकृत लगभग सभी ग्रन्थों का सार संक्षिप्त में लिखा है। साथ ही इस ग्रन्थ ही उत्तमता इसलिए और अधिक बढ़ जाती है कि इसमें पुस्तकों के अतिरिक्त पूना में दिये पन्द्रह प्रवचन, मुम्बई प्रवचन तथा कुछ शास्त्रार्थों का भी वर्णन है जिससे पुस्तक रोचक बन गई है। मैंने इस लेख में सत्यार्थप्रकाश के कुछ उपयोगी अंशों का उल्लेख किया है, कृपया पाठकगण इनसे लाभ उठावें।

1. आत्मा का स्वभाव—मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।

2. महर्षि की प्रतिज्ञा—यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ हूं और बसता हूं तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाश करता हूं, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा अन्य मतावालों के साथ भी वर्तता हूं। जैसे स्वदेशवालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी। मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध (रोक, अवरोध) करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन के बाहर हैं।

3. सर्वशक्तिमान् का अर्थ—सर्वशक्तिमान्, शब्द का यही अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य, पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित् भी किसी की सहायता नहीं लेता।

4. प्रार्थना और पुरुषार्थ—जो मनुष्य जिस बात के लिए प्रार्थना करता है, उसको वैसा ही प्रयत्न करना चाहिए। अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें तब उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न होसके उतना किया करें। अपने पुरुषार्थ के बाद यदि वह वस्तु नहीं मिलती है तब ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

5. 'यदा यदा हि धर्मस्य' का अर्थ—श्री कृष्ण धर्मात्मा लोगों की और धर्म की रक्षा करना चाहते थे, कि मैं युग-युग में जन्म लेकर श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ। क्योंकि **'परोपकाराय सतां विभूतयः'** परोपकार के लिए ही सत्पुरुषों का तन, मन, धन होता है। तथापि इससे श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।

6. आर्य ही, आर्यावर्त के मूल निवासी हैं—किसी संस्कृतग्रंथ में वा इतिहास में कहीं नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से या मध्य एशिया से आये और यहां के जंगली लोगों से लड़कर, विजय प्राप्त करके इस देश के राजा हुए। आर्यों के आने से पहले इस देश का नाम क्या था, कोई नहीं बतला सकता, तब विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है।

7. स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि होता है—कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वही सर्वोपरि वा उत्तम होता है। विदेशियों का राज्य, चाहे कितना भी पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता, पिता के समान कृपा, न्याय और दया रखने वाला हो, तब भी पूर्ण सुखदायक नहीं होसकता।

8. जन्म और मरण क्या है—जब शरीर से जीव निकलता है, उसी का नाम मृत्यु और शरीर के साथ संयोग होने का नाम जन्म है। जब जीव, शरीर छोड़कर कुछ समय के लिए यमालय अर्थात् आकाशस्थ वायु में रहता है, तत्पश्चात् ईश्वर की न्यायव्यवस्था के अनुसार जीव, माता के गर्भ में जाता है। यम नाम वायु का है। गरुड़ पुराण का कल्पित यम नहीं है।

9. स्वर्ग और नरक क्या है—सुखविशेष का नाम स्वर्ग और विषय, तृष्णा में फंसकर दुःखविशेष पाने का नाम नरक कहलाता है। जो संसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो योग-साधना तथा अच्छे कर्मों द्वारा जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही विशेष स्वर्ग वा मोक्ष कहलाता है।

10. हमारी पराधीनता के कारण—विदेशियों का आर्यावर्त में राज्य होने के कारण-आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना, जन्म से जाति यानि वर्ण मानना, कर्म से नहीं, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति , मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेदविद्या का प्रचार न होना आदि हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

11. गोवध से हानि—जब आर्यों का राज्य था, तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे। तभी आर्यावर्त वा अन्य भूगोल के देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे। जब से विदेशी, मांसाहारी इस देश में आकर गौ आदि पशुओं के मारनेवाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है।

12. मनुष्य कौन होता है—मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्याय-कारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं , किन्तु अपने पूर्ण सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महाअनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हो, तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक होसके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे कितना भी दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।

13. वैदिक धर्म सब से प्राचीन-यह सिद्ध बात है कि पाँच सहस्र वर्षों के पूर्व वैदिक धर्म से भिन्न दूसरा कोई भी धर्म न था। क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या अविरुद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। वेदों की अप्रवृत्ति से अविद्या अन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर, जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। जिससे मानवमात्र की बड़ी हानि हुई।

14. वेदोक्त धर्म में मानवता का हित—महाभारत से पूर्व सर्वभूगोल में एक ही वेदोक्त धर्म था। उसी में सब की निष्ठा थी और एक दूसरे का सुख-दुःख, हानि-लाभ आपस में अपने समान समझते थे। तभी भूगोल में सुख था। अब तो बहुत से मतवाले होने से बहुत दुःख और विरोध बढ़ गया है। इसका निवारण करना बुद्धिमानों का काम है।

15. आर्यों के पतन का कारण—स्वायंभुव राजा से लेकर पाण्डव-पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध में लड़कर नष्ट होगये। क्योंकि इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुतसा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक हो जाता है, तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता, ईर्ष्या-द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या-सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं।

16. महाभारत युद्ध से हानि—जब बड़े-बड़े विद्वान् , राजा-महाराजा, ऋषि-महर्षि लोग, महाभारत युद्ध में बहुत से तो मारे गये और बहुत से मर गये तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आपस में करने लगे। जो बलवान् हुआ वह देश को दाबकर राजा बन बैठा। इस प्रकार सर्वत्र आर्यावर्त देश खण्ड-खण्ड राज्यों में बंट गया।

17. सार्वभौम मानवीय एकता कैसे हो—जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मत-मतान्तरों का होना नहीं छूटेगा, तब तक लोगों को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विद्वज्जन ईर्ष्या, द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह वैदिक धर्म के मानने से ही सम्भव है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।